A

आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015-2017

मासिक पत्रिका

अजायब • बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : सातवां | नवम्बर-2015

5 सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
दिवाली
(गुरु रामदास जी की बानी)
16 पी.एस. राजस्थान आश्रम

27 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सतसंग हॉल के बारे में
बाबा सोमनाथ जी की संगत को संदेश

32 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
विदाई संदेश

34 मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम
धन्य अजायब

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)
उप संपादक-नन्दनी

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
096 67 23 33 04
099 28 92 53 04
सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 नवम्बर 2015 -164- मूल्य – पाँच रुपये

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दिवाली

गुरु रामदास जी की बानी | DVD -289 | 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

उस परमात्मा शब्द रूप सावन-कृपाल के चरणों में करोड़ों बार नमस्कार है। गुरु नानकदेव जी महाराज ने अपने गुरुदेव के आगे अरदास कीः

फिरत-फिरत प्रभ आया परया तुम शरणाई।
नानक की प्रभ बेनती अपनी भक्ति लाई।।

आमतौर पर हमारे दिल में यह ख्याल होता है कि भक्ति करना कौन सा मुश्किल है? जब दिल करेगा भक्ति की तरफ लग जाएंगे लेकिन जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं उन्हें पता है कि जिस परमात्मा ने इस संसार की रचना पैदा की है उसने इसे लावारिस नहीं छोड़ा, उसने अपने नियम बनाए हैं। जिस तरह चन्द्रमा का निकलना, सूरज का निकलना, हवा का चलना, आंधी का आना और वक्त आने पर मौत-पैदाईश सब कुछ ही होता हैं।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, ''न हम अपनी मर्जी से जी सकते हैं और न ही अपनी मर्जी से मर सकते हैं, यह भी उसने पहले से ही मुकर्र किया हुआ है।'' हम रोज यह सब अपनी आँखों से देखते हैं और ये हमारे साथ गुजरती भी हैं लेकिन सन्तों के तजुर्बे में यह आया है अगर परमात्मा की अति कृपा होती है तभी हम भक्ति की तरफ आ सकते हैं, यह कानून भी परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है कि वह जिसे चाहे भक्ति से दूर करे, जिसे चाहे अपनी भक्ति में लगाए।

आमतौर पर हम कोई भी काम शुरू करने से पहले अच्छा मुहूर्त देखते हैं, हमने जो काम शुरू करना होता है उसके मुताबिक

शगन भी करते हैं और विचार भी करते हैं। सन्त-महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि सबसे अच्छा मुहूर्त वह समय है जब हमारा मिलाप मालिक के प्यारों से हो जाता है और उससे अच्छा समय वह है जब मालिक के प्यारे हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं। वह समय उससे भी अच्छा होता है जब हम उस समय का उससे भी अच्छा उपयोग करते हैं।

सन्त-सतगुरु हमें 'शब्द-नाम' की कमाई करने का उपदेश देते हैं। जब हम 'शब्द-नाम' की कमाई करने लग जाते हैं तब हम उनके हुक्म के अंदर रहना शुरू कर देते हैं। सन्त-महात्मा बताते हैं कि हमें कथनी के सूरमें जगह-जगह मिल जाएंगे क्योंकि हर आदमी यही सोचता है कि मैं कथनी करके शायद! दो-चार आदमियों में या अपने अंदर वैराग्य पैदा कर लूंगा।

आमतौर पर हम देखते हैं कि जो लोग राग या अच्छी कथा करते हैं वे लोगों को रिझाने के लिए खुद रोने लग जाते हैं और दूसरों को भी रूला देते हैं। दिल में ख्याल आता है शायद! ये बहुत वैरागी हैं ये परमात्मा से मिले होंगे लेकिन सन्तमत में ऐसे वैरागियों की कोई अहमियत नहीं। गुरु नानक साहब कहते हैंः

गल्ली किन्हें न पाया, न भीजे रागी न कोई बेदी।

आप कहते हैं चाहे कोई कितने भी राग गा ले चाहे कितने भी ऊँचे सुर निकाल ले, परमात्मा इन कर्मों से कभी नहीं रीझता। हम जानते हैं अगर हमनें खेती करनी है तो खेती भी मेहनत मांगती है। बिना मेहनत के व्यापार भी नहीं होता। दुनिया का कोई भी कारोबार करना हो तो हमें उस काम के नियमों का पालन करना पड़ता है। सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है, मोती निकालने के लिए गहरे समुद्र में डुबकी लगानी पड़ती है।

जब 'शब्द-नाम' की कमाई का वक्त आता है तो हम कहते हैं कि अभी सतगुरु की दया नहीं, अभी हमारा समय नहीं आया! अच्छा भाई! मालिक कृपा करेगा। क्या हमनें कभी ख्याल किया कि जब दुनिया का कोई भी कारोबार बिना मेहनत और मशक्कत के नहीं होता तो क्या हम परमात्मा की भक्ति सोते हुए या बातें करते हुए कर सकते हैं? भक्ति भी मेहनत और मशक्कत मांगती है बल्कि भक्ति कारोबार से भी ज्यादा मेहनत मांगती है। दुनिया के कारोबार में हमारा मन लगा ही हुआ है, चौबिस घंटे हमारा झुकाव उसी तरफ है लेकिन मन को दुनिया की तरफ से पलटने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है।

मैं आप बीती हुई बताया करता हूँ कि तोप के आगे खड़े होना तो आसान है क्योंकि लोग हमारी वाह! वाह! करते हैं कि यह बहुत हौंसले वाला है लेकिन नाम की कमाई करना बहुत मुश्किल है। जब हम अभ्यास पर बैठते हैं तो मन शेर बनकर खड़ा हो जाता है कि मैंने तुझे अभ्यास पर नहीं बैठने देना। आप उन लोगों से पूछकर देखें जिन्होंने संघर्ष किया होता है।

जब दूसरी वर्ल्ड वार लगी हुई थी उस समय मेरी उम्र ज्यादा नहीं थी। मुझे ब्वायज कंपनी में भर्ती किया गया था। ब्वायज कंपनी वालो की लड़ाई में जाने की टर्न नहीं होती। मेरे दिल में देश सेवा के लिए शौक, प्यार और बहुत जज्बा था। मैंने खुशी से लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दे दिया।

उन दिनों महाराज सावन सिंह जी से सुना था कि देश सेवा बहुत अच्छी है अगर कोई देश सेवा करते हुए मर जाए तो वह स्वर्ग में जाता है। उस समय हम स्वर्गों को बहुत ऊँचा समझते थे। जब मैंने लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दिया तब छोटी उम्र

होने की वजह से हर कोई मुझे पैरों से लेकर सिर तक देखता था कि यह छोटी सी उम्र का बालक कितना दिलेर है इसने लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम क्यों दिया है?

उस समय लोगों का मनोबल बहुत गिरा हुआ था। जब हमारी डाक्टरी जाँच की गई तो डाक्टर ने हमारे कमांडर से कहा, ''आप सिफारिश करें मैं किस-किसका दूध लगवाऊं?'' हमारे कमांडर ने आँखों में पानी भरकर कहा, ''सारे ही बलि के बकरे हैं तू सबका ही दूध लगा दे।'' मुझे याद है कि हम नाभा की जेल से कैदियों को लेने के लिए गए कि जिन्होंने आर्मी में जाना है वे आ जाएं। उन लोगों ने बीस-बीस साल जेल में रहना मंजूर किया लेकिन आर्मी में आना मंजूर नहीं किया।

उस समय हिटलर बहुत जोरों पर था। वह कहता था कि मैंने कल उस जगह चाय पीनी है, अगले दिन वह वहीं पहुँच जाता था। आप देखें! दुश्मन पर फतह करने के लिए कितने खून होते हैं कितनी कत्लो-गारत होती है?

जिस समय महाराज कृपाल ने मुझे आँखे बंद करके इस जगह गुफा में बिठाया और कहा, ''प्यारे बेटा! मैं खुद ही तेरे पास आऊंगा।'' उस समय मन शेर की तरह आकर खड़ा हो जाता था। महाराज सावन कहा करते थे, ''मन तोप के आगे खड़ा हो जाता है लेकिन भजन के लिए कभी तैयार नहीं होता।''

हम मेहनत के चोर हैं, बहाने-बाजी करते हैं कि अभी समय नहीं आया सतगुरु की दया नहीं हुई। सतगुरु इससे ज्यादा क्या दया करेगा वह अपना देश छोड़ता है भेष छोड़ता है आत्मा को लेने के लिए टट्टी-पेशाब का चोला पहनकर सदा ही संसार में आता है।

उसने अपना देश छोड़ा हमें मुफ्त में 'शब्द-नाम' का भेद दिया फिर वह यह भी नहीं कहता कि आप अकेले जाएं। वह कहता है, ''बेटा! हौंसला करें सिमरन करके मेरे पास पहुँचें।''

स्कूल में जाना बच्चे की ड्यूटी है आगे टीचर पढ़ाऐगा। हमारा स्कूल इन दोनों आँखों के दरम्यान है हमारे मन और आत्मा की गाँठ तीसरे तिल पर बंधी हुई है। हम स्कूल में तो जाते नहीं ऐसे ही बैठे हुए शिकायतें करते हैं कि अभी दया नहीं हुई, समय नहीं आया; यह सिर्फ आलस है हमारे मन का बहाना है।

सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं कि सबसे ऊँचा और सुच्चा दिन वह है जब हमारा मिलाप मालिक के प्यारो से हो जाता है। गुरु अर्जुनेदेव जी महाराज कहते हैंः

जां दिन भेटे साध संग, उहाँ दिन बलिहारी।

मैं उस दिन पर बलिहार जाता हूँ, कुर्बान जाता हूँ जिस दिन मेरा मिलाप किसी मालिक के प्यारे के साथ हुआ। आपके आगे गुरु रामदास जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनने वाला है। आप कहते हैं कि हमारे मन और आत्मा की सीट दोनों आँखों के दरम्यान है। यहाँ से हमारा मन सैकिंड-सैकिंड बाहर दुनिया की तरफ जाता है। यहाँ मन और आत्मा की गांठ बंधी हुई है जब हमारा मन ही इस जगह आकर नहीं ठहरता तो हम अंदर किस तरह तरक्की कर सकते हैं?

सन्त-महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि हमने बाहर जाते हुए मन को किस तरह मोड़ना है, किस तरह मन और आत्मा की बंधी हुई गाँठ को खोलना है? पहले हमारी आत्मा प्योर और पवित्र थी जब मन ने कर्म नहीं किए थे उस समय इसके ऊपर कोई गंद नहीं

चढ़ा हुआ था जैसे-जैसे आत्मा और मन संसार में विचरते गए इनके ऊपर कर्मों का बोझ चढ़ता गया। अब मन अपने घर को भूल गया है और आत्मा अपने घर को भूल गई है।

सन्त-महात्मा संसार में कोई नया रास्ता लेकर नहीं आते और न ही कोई मजहब बनाने के लिए आते हैं। वे हमारे मन और आत्मा को उसकी भूली हुई जगह पहुँचाने के लिए आते हैं।

प्यारे बच्चो! यह आपका घर नहीं यह आपकी कौमें नहीं। पता नहीं ये बच्चे पहले कितने जामों में आपके बच्चे बन चुके हैं। जब पशु-पक्षी के जामें में हैं उस समय भी बच्चे होते हैं। हम योनि के मुताबिक भोग भोगते हैं, अच्छे-बुरे खाने खाते हैं। ऐसे भी कुत्ते हैं जो अच्छे महलों में रहते हैं अच्छे खाने खाते है और ऐसे भी कुत्ते हैं जिन्हें गलियों में गंद खाने को भी नहीं मिलता।

इसी तरह ऐसे भी इंसान हैं जो अच्छे-अच्छे महलों में रहते हैं, अच्छे खाने खाते हैं और ऐसे भी इंसान हैं जो सड़कों पर रूलते-फिरते हैं न उनके पास पहनने के लिए कपड़े हैं, न उन्हें नहाने का समय मिलता है और न ही पेट भर खाने को मिलता है। ऐशो-ईशरत, सुख-दुख हम हर जामें में भोगते आए हैं। इंसान के जामें का फर्क सिर्फ यही है कि हम परमात्मा की भक्ति इंसान के जामें में ही कर सकते हैं।

महात्मा बताते हैं कि हमारे मन और आत्मा की गाँठ बंधी हुई है। जब तक हम इस गांठ को नहीं खोलते आत्मा को इसके पंजे से आजाद नहीं करते तब तक हमारी आत्मा अपने घर वापिस नहीं जा सकती। हमने मन की गाँठ को कैसे खोलना है? अपने फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाना है।

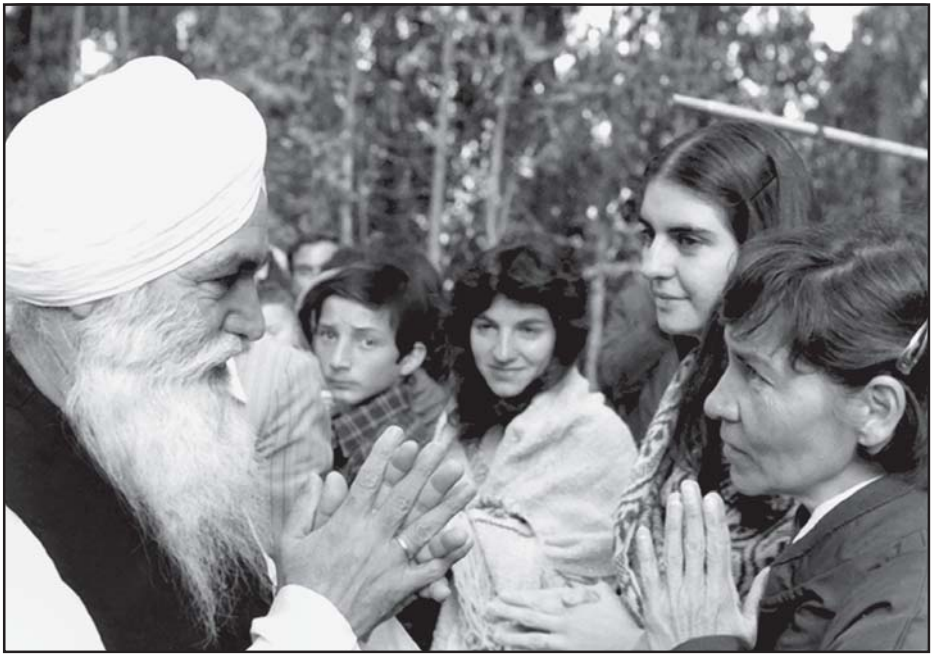

महात्माओं ने अपनी अलग-अलग भाषाओं में इसके कई नाम रखे हुए हैं। किसी महात्मा ने इसे तीसरा तिल किसी ने इसे घर-दर तो किसी महात्मा ने इसे मुक्ति का दरवाजा कहा है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप डंडे को चाहे लट्ठ या डंडा कुछ भी कह लें सवाल तो फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाना है।'' आपने अपने ख्याल को तीसरे तिल पर रखकर बार-बार महात्मा के सिमरन को याद करना है। सिमरन करने पर कोई जोर नहीं लगता कोई बोझ नहीं उठाना पड़ता। हम घर में काम करते हैं तो हमारा मन कल्पना करता ही रहता है। यहाँ जिस्म जरूर बैठा है लेकिन मन किसी न किसी कल्पना में लगा हुआ है। दफ्तर वाले फाइलों की कल्पना करते हैं। दुकानदारी का काम करने वालों के आगे ग्राहक आते रहते हैं। जमींदार के मन में खेती के कारोबार की कल्पना लगी रहती है।

महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि हम दिन-रात दुनिया के कारोबार की कल्पना करते हैं क्यों न हम सिमरन की कल्पना में लग जाएं! पहले हमें जुबान से सिमरन करना पड़ता है जिस तरह बच्चा स्कूल में जाता है तो पहले-पहले वह जुबान से ए बी सी कहता है जब जुबान पक जाती है तो बोलने की जरूरत नहीं पड़ती।

शुरू-शुरू में जब हम आर्मी में गए तो उस समय हमें कदम याद करवाने के लिए लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट बुलवाते हैं; जब यह पक जाता है तो सिर्फ चलते ही जाते हैं। इसी तरह शुरू-शुरू में सिमरन हमारी जुबान पर नहीं चढ़ा होता तो हमें वह गिनती की तरह गिनना पड़ता है जब सिमरन जुबान पर चढ़ जाता है तो हमें जुबान हिलाने की जरूरत नहीं पड़ती, याद करने की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि यह कल्पना की तरह हमारे अंदर चौबिस घंटे अपने आप ही चलता रहता है। जब सिमरन मन की जुबान पर चढ़ जाता है तब यही सिमरन आत्मा की जुबान पर चढ़ जाता है फिर चाहे समाधि की अवस्था में जाएं सिमरन अपने आप ही बिजली की तार की तरह हिलता रहता है।

अगर हम थोड़ी बहुत हिम्मत करके चलते-फिरते, उठते-बैठते, दिन-रात मन की जुबान से सिमरन करें तो आत्मा की जुबान से सिमरन अपने आप ही होने लग जाता है। जब इस तरह का सिमरन बन जाता है तो हम जब भी अभ्यास पर बैठेंगे हमें टांगे अकड़ाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, फौरन हमारा ख्याल तीसरे तिल पर आ जाएगा। 'शब्द' की आवाज अपने आप ही आ जाएगी फिर हमें ढूंढने की जरूरत नहीं पड़ती, यहाँ शब्द चौबिस घंटे आ रहा है। मसला तो यह है कि 'शब्द' अभी भी यहाँ आ रहा है लेकिन हम इस जगह एकाग्र नहीं होते।

महात्मा बताते हैं कि हमारे अंदर निरत और सुरत दो शक्तियां हैं। निरत देखने वाली शक्ति को कहते हैं और सुरत सुनने वाली शक्ति को कहते हैं। इसे गुरु साहब कहते हैंः

अंतर जोत निरंतर बाणी सच्चे साहिब स्यों लिव लाई।

जब हम फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाते हैं तो निरत ज्योत के दर्शन करना शुरू करती है और सुरत आवाज को पकड़ती है। जब हम सारे पर्दे उतारकर दसवें द्वार में पहुँच जाते हैं वहाँ शब्द का नूर देखते हैं सन्तों ने इसे ही **दिवाली** करना कहा है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

सन्त दिवाली नित करे सतलोक के माहे।

जब ख्याल अंदर ले गए तो वही **दिवाली** है, वहाँ नूर और प्रकाश है। ऋषियों-मुनियों ने हमारे अंदर शौक पैदा करने के लिए बाहर की **दिवाली** को दीपक जलाकर बताया है। जब आप पहली मंजिल पर जाएंगे तो देखेंगे आपके अंदर हजारों पंखड़ियों का कमल जगमगा रहा है।

रामायण के अंदर राम को सतगुरु-परमात्मा, आत्मा को सीता और मन को रावण कहकर बयान किया गया है। जिस तरह सीता आत्मा की खातिर राम परमात्मा ने बहुत संघर्ष किया, कष्ट उठाए और सीता आत्मा को रावण मन की जेल से स्वतंत्र करवाया। इसी तरह परमात्मा गुरु भी हमारी आत्मा सीता को आजाद करने के लिए कितने कष्ट झेलता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''बाल्मीकि ने दस हजार साल पहले ही रामायण लिख दी थी। राम, लक्ष्मण और सीता तो बाद में हुए हैं। आप अंदर जाकर देखें! अंदर सारा रामायण का खेल हो रहा है। काल ने सोचा! जो इस रामायण को पढ़ेगे इस

पर अमल करेंगे वे फौरन अंदर चले जाएंगे। रामायण में जो नाम वर्णन किए गए है काल ने वही नाम बाहर रखकर खेल दिखा दिया। हमें समझाया जाए तो हम मानने के लिए तैयार नहीं होते।''

सन्त-महात्मा कहते हैं कि आप अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाकर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर त्रिकुटी में पहुँच जाएंगे। गुरु नानक साहब कहते हैंः

गुरु प्रशादी त्रिकुटी छूटे चौथे पद लिव लाई।

हम किनकी कृपा से वहाँ पहुँचते हैं? जब सन्त-सतगुरु हमारे ऊपर कृपा करते हैं, अपना नाम देते हैं तब हमारी लिव चौथे पद में लग जाती है हम त्रिकुटी ब्रह्म से छुटकारा पा लेते हैं। जब हम 'शब्द-नाम' की कमाई करके इस जगह पहुंच जाते हैं मन त्रिकुटी में रह जाता है और आत्मा इसके पंजे से आजाद हो जाती है फिर रूह और मन की बंधी हुई गांठ खुल जाती है।

मन खिन खिन भरम भरम बहु धावै तिल घर नहीं वासा पाईऐ।।
गुर अंकस शबद दारू सिर धारयो घर मंदर आण वसाईऐ।।

अब गुरु साहब प्यार से बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि हाथी बहुत ताकतवर जानवर होता है अगर वह खुला हो तो दुनिया में लोगों को वैसे ही रोलता हुआ चला जाता है। जब वह मस्ती में आता है तो बहुत नुकसान करता है लेकिन महावत लोगों के पास बड़ी युक्ति होती है उन्होंने लोहे के डंडे के आगे तीखी आर लगाई होती है फिर चाहे हाथी को स्कूल में ले जाएं वह बच्चों के आगे आँख उठाकर भी नहीं देखता। लोग हाथी के ऊपर चढ़कर बाजारों में घूमते फिरते हैं। इतने ताकतवर जानवर को महावत लोग अंकुश के जरिए वश में करते हैं।

इसी तरह दुनिया ने मन को वश में करने के बहुत से उपाय किए हैं। मैंने अपनी जिंदगी में काफी कुछ किया है लेकिन इन कर्मकांडो को करने से हमारा मन वश में नहीं आता बल्कि मन के अंदर और अहंकार पैदा हो जाता है कि मैंने इतने जलधारे किए, धूनियां तपाई, नंगे पैर तीर्थ कर लिए हैं। यह सब करने के बाद मन नीचा होने की बजाय और ऊँचा हो जाता है।

अब आप प्यार से कहते हैं कि आपने मन को वश में करने के लिए सिमरन करके इसे त्रिकुटी में ले जाना है। त्रिकुटी में गुरु का शब्द अंकुश का काम करता है। जो मन हिरन की तरह विषय-विकारों में दुनिया के स्वादों में मस्त हुआ फिरता है जल्दी से अभ्यास पर बैठेने नहीं देता फिर यही मन सहायता करने लग जाता है, हमारा मित्र बन जाता है।

गुरु के शब्द की ताकत का उस समय पता लगता है जब हम अपने आपको उस शब्द के बीच जज्ब कर देते हैं। पहले हम सोचते हैं कि यह शब्द पढ़ने वाला, गाने-बजाने वाला है या हमें मामूली नाम ही बताए हुए हैं लेकिन इनके पीछे रिहायश छिपी हुई है। ये पाँच पवित्र नाम उन पाँच विशाल धनियों के नाम हैं जिन्हें हमारी आत्मा ने पार करना होता है।

अगर हमने यहाँ से अमेरिका जाना है तो हमें पता है कि हमने रोम से होकर न्यूयार्क या बोस्टन जाना है तो हमें किस जगह रूकना पड़ता है? अगर हम पहले कभी उस रास्ते से गुजरे हों तो हमें किसी से पूछने की जरूरत नहीं पड़ती। जिस तरह माईल स्टोन पर लिखा होता है तो हम सड़क पर अपनी कार दौड़ाते जाते हैं। जो प्रेमी अंदर जाते हैं उन्हें पता है।

पश्चिम में और यहाँ भी बहुत से पढ़े-लिखे प्रेमी आते हैं। नामदान का वक्त बहुत पवित्र होता है। जब उन्हें नाम देते हैं तो वे उन अक्षरों का अर्थ पूछते हैं? हम उन्हें हँसकर कहते हैं कि जब तू अंदर जाएगा तुझे अपने आप ही इनका अर्थ पता लग जाएगा।

अगर कोई हमारे आगे खाना बनाकर रखें और हम उससे पूछें कि इस खाने का क्या मतलब है? स्याना आदमी यही कहेगा कि तू खाना खाकर देख तुझे अपने आप ही पता लग जाएगा। बिना अन्न के चला नहीं जाता, खाने से ही ताकत आती है। हमारी आत्मा जन्म-जन्मांतरों से कमजोर है, शब्द के अंदर ताकत है। जब हम अंदर जाएंगे तो मार्ग अपने आप ही किताब की तरह खुल जाएगा; वहाँ इनके अर्थों की जरूरत नहीं पड़ती।

आप कहते है कि वहाँ पहुँचकर पता लगता है कि गुरु का शब्द किस तरह अंकुश का काम करता है? फिर मन हाथी की फौज - काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आँख उठाकर नहीं देखते क्योंकि ये अंकुश से डरते हैं फिर चाहे मन के आगे अच्छे-अच्छे खाने, विषय-विकार और ऐशो-ईशरतों की चीज़े रख दें ये अंदर के रस के मुकाबले तुच्छ हैं, राख की तरह लगते हैं। समझदार आदमी को अमृत पीने को मिले तो क्या वह राख मुँह में डालेगा?

गोबिंद जीओ सतसंगत मेल हर ध्याईऐ।।

आप कहते हैं, ''दिल में ख्याल होता है कि भक्ति करना कौन सा मुश्किल है? जगह-जगह महात्मा बैठे हैं, जब चाहेंगे भक्ति करने लग जाएंगे लेकिन जिन पर परमात्मा मेहर करता है वही भक्ति की तरफ लग सकते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

मैं तो उन सन्तों का दास जिन्होंने मनुआ वस में करया।

ऐसे महात्मा दुनिया को छोड़कर भगवे कपड़े पहनकर बाहर नहीं फिरते, कान फड़वाकर शरीर पर राख नहीं लगाते। वे संसार में रहकर अपनी जीविका चलाते हैं चाहे खेती करें! चाहे व्यापार करें! वे दुनिया में उस मक्खी की तरह रहते हैं जो मक्खी शहद के किनारे बैठकर शहद खा भी लेती है और उड़ भी जाती है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''एक मक्खी शहद के बीच में आकर बैठ जाती है वह उड़ नहीं सकती। टाँगे निकालती है तो पर फँस जाते हैं पर निकालती है तो टाँगे फँस जाती है। इसी तरह हम दुनियादार लोग दुनिया के कीचड़ में फँसे रहते हैं। न हम भक्ति कर सकते हैं और न दुनिया में ही पूरे आते हैं।''

हमारे घर में शादी हो, लड़का पैदा हो जाए हम फूले नहीं समाते पार्टियां करते हैं अगर उसी घर में कोई मौत हो जाती है तो हम रोना-पीटना शुरू कर देते हैं; सारी जिंदगी खुष्क हो जाती है। यह संसार मौत-पैदाईश का है। हम मौत के समय भी दुखी होते हैं और पैदाईश के समय भी दुखी होते हैं।

हे परमात्मा! तू हमें ऐसा वातावरण दे जिसमें हमारा भूला मन तेरी भक्ति की तरफ लग जाए। हमें संगत में जाने के लिए किसी खास किस्म के कपड़े नहीं पहनने पड़ते। मन के ऊपर सोहबत का बहुत असर होता है अगर हम जुएबाजों की सोहबत में जाएंगे तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाएगी; शराबियों की सोहबत में जाएंगे तो शराब पीने की आदत पड़ जाएगी। अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करने वालों के पास जाएंगे तो हमें 'शब्द-नाम' की कमाई करने की आदत पड़ जाएगी।

हौमें रोग गया सुख पाया हर सहज समाध लगाईऐ।।

संगत में जाने से हमारे अंदर से हौमें का रोग चला जाता है जब हम गरीब-अमीर एक तप्पड़ पर बैठकर इकट्ठे खाना खाते हैं उस समय हमें अपने अंदर नम्रता लाने का मौका मिलता है कि सारे जीव परमात्मा ने बनाए हैं। हमारी आर्मी का बड़ा कमांडर थमैया महाराज सावन सिंह जी से मिलने के लिए गया। जनरल विक्रम सिंह भी महाराज जी से मिलने के लिए जाया करते थे। मुझे जनरल बिक्रम सिंह के साथ जाने का ज्यादा से ज्यादा मौका मिलता रहा है। महाराज जी ने उनके लिए कुर्सी मंगवाई लेकिन उन्होंने नीचे ही तप्पड़ पर बैठकर खाना खाया और कहा, ''किसी महात्मा के चरणों में बैठने का जिंदगी का यही मौका है।''

सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी फौजियों के साथ बहुत प्यार करते थे क्योंकि आप खुद आर्मी में रहे थे। आप जानते थे कि इन्हें बहुत थोड़ा टाइम मिलता है, ये समय के पाबंद होते हैं।

सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं, ''प्यारे बच्चो! एक म्यान में दो तलवारे नहीं रह सकती। जहाँ हौमें-अहंकार है वहाँ कभी भी परमात्मा प्रकट नहीं होता, यह तो नम्रता का खेल है। पानी हमेशा नीची तरफ ही जाता है, पानी पहाड़ पर नहीं रूकता नीचे चश्में में आकर ही रूकता है।''

मैं हमेशा ही बताता रहा हूँ कि जब भक्त अपनी कमजोरी की तरफ और अपने पापों की तरफ देखता है तब वह अपने गुरु-परमात्मा के आगे सच्चे दिल से फरियाद करते हुए कहता है, ''हो सकता है कि मुझे अपने कर्मों की वजह से बहुत लंबी और कठोर सजा भुगतनी पड़े क्योंकि मैं दुनिया से तो चोरी करता हूँ लेकिन परमात्मा देख रहा है। काम ने मेरी मत मार रखी है। हे परमात्मा-

गुरु! तू लेखा लेने से पहले ही मुझे बख्श दे अगर तू मुझसे लेखा मांगेगा तो मैं पूरा नहीं आ सकता।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लेखा करत न छूटिए, खिन्न खिन्न भूलनहार।
बख्शनहारा बख्श ले, ते नानक पार उतार।।

हे प्रभु! मैं लेखा करके छूट ही नहीं सकता। पता नहीं कितने जन्मों के कर्म हैं। जब हम सन्तों के मुख से नम्रता भरे वचन सुनते हैं तो हमारे भूले हुए मन में भी नम्रता आनी शुरू हो जाती है। हम आमतौर पर सोचते हैं कि दरवाजा बंद करके जो मर्जी आए कर लें कौन सा परमात्मा देख रहा है? मैंने अपने आपको और परमात्मा को धोखा दिया क्योंकि मैं सोचता था कि दुनिया बड़ी है और परमात्मा छोटा है।

घर रतन लाल बहु माणक लादे मन भ्रमया लेह् न सकाईऐ।

सन्त नाम को लाल, रतन कहते हैं। परमात्मा ने हर किसी के अंदर नाम के खजाने रखे हैं लेकिन भ्रम के वश होकर हमारा मन बाहर ही बाहर घूम रहा है। हम जो कुछ बाहर देखते हैं माता-पिता, बहन-भाई, जायदाद, धन-दौलत ये सब कुछ भ्रम है। आज हम जो बेटे-बेटियां, धन-दौलत लेकर बैठे हैं ये पहले किसी और के पास थे। हमारे बड़े-बुजुर्गों का इन जायदादों के साथ बहुत लगाव था वो इन्हें साथ लेकर नहीं गए तो हम क्या आशा लगाए बैठे हैं? इसलिए हम जो कुछ देख रहे हैं यह भ्रम है।

परमात्मा ने हमारे अंदर नाम के खजाने रखे हैं हमने उन्हें किस तरह प्राप्त करना है? सन्त-महात्माओं ने हमारे अंदर कुछ रगड़कर या घोलकर नहीं डालना। आज जो जज या वकील जैसे ऊँचे ओहदों पर हैं उनसे पूछें कि क्या तुम्हारे उस्तादों ने तुम्हारे अंदर कुछ रगड़कर या घोलकर डाला था? वे हमें यही कहेंगे कि हमने अपने उस्तादों की सोहबत की, उनका कहना माना। जिन्होंने अपने टीचर का कहना नहीं माना वे आज भी अनपढ़ घूम रहे हैं। विद्या की ताकत तो उनके अंदर भी है लेकिन वह सोती हुई आई और सोती ही चली गई। भीखा साहब कहते हैंः

भीखा भूखा को नहीं सबकी गठड़ी लाल।
गिरह खोल न जाणी तांतें भए कंगाल।।

परमात्मा ने किसी के लिए कमी नहीं रखी, हर एक के अंदर नाम का खजाना रखा हुआ है लेकिन हम अंदर जाकर इसे प्राप्त नहीं करते इसलिए हम कंगाल हैं।

ज्यों ओडा कूप गुहज खिन काढै त्यों सतगुर वस्त लहाईऐ।।
जिन ऐसा सतगुर साध न पाया ते धृग धृग नर जीवाईऐ।।

जिस तरह पुरातन जगहों के नीचे बने बनाए कुएं आ जाते हैं। ओडा लोगों को यह इल्म होता है उस जगह की खुदाई करने से पता लगता है कि किसी समय इस जगह के नीचे बने बनाए मकान या शहर बसते थे। उन्हें सींगे भी कहते हैं वे अपने हुनर से सूंघकर बता देते हैं कि आप यहाँ से मिट्टी हटाएंगे तो यहाँ बना बनाया कुँआ निकल आएगा।

इसी तरह सन्त-महात्माओं को भी यह इल्म होता है यह उनका जातिय तजुर्बा है वे सुनी-सुनाई बातें नहीं कहते। वे कहते हैं अगर आप भी हमारे कहने के मुताबिक हिम्मत करके अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाकर 'शब्द' के साथ जोड़ेगे तो आप भी इस खजाने को प्राप्त कर सकते हैं।

आप प्यार से कहते हैं इंसानी जामा पाकर जिन्होंने जिंदगी का मसला हल नहीं किया, उनका दुनिया में आना लानत है।

जनम पदारथ पुंन फल पाया कौडी बदलै जाईऐ।।

जब हमारे बहुत सारे अच्छे-नेक कर्म जमा हो जाते हैं तो परमात्मा खुश होकर हमें इंसानी जामे का ईनाम देता है। परमात्मा कहता है, ''तूने दुनिया के धंधे मान-बड़ाई, विषय-विकारों से मोह लगाया हुआ है। तू इस जामें में मेरे साथ मिलाप कर ले।'' परमात्मा ने हमें बहुत नेक कर्मों का ईनाम इंसान का जामा दिया है लेकिन हम इसमें भूले बैठे हैं इसकी कीमत नहीं समझते। हम कहते हैं:

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

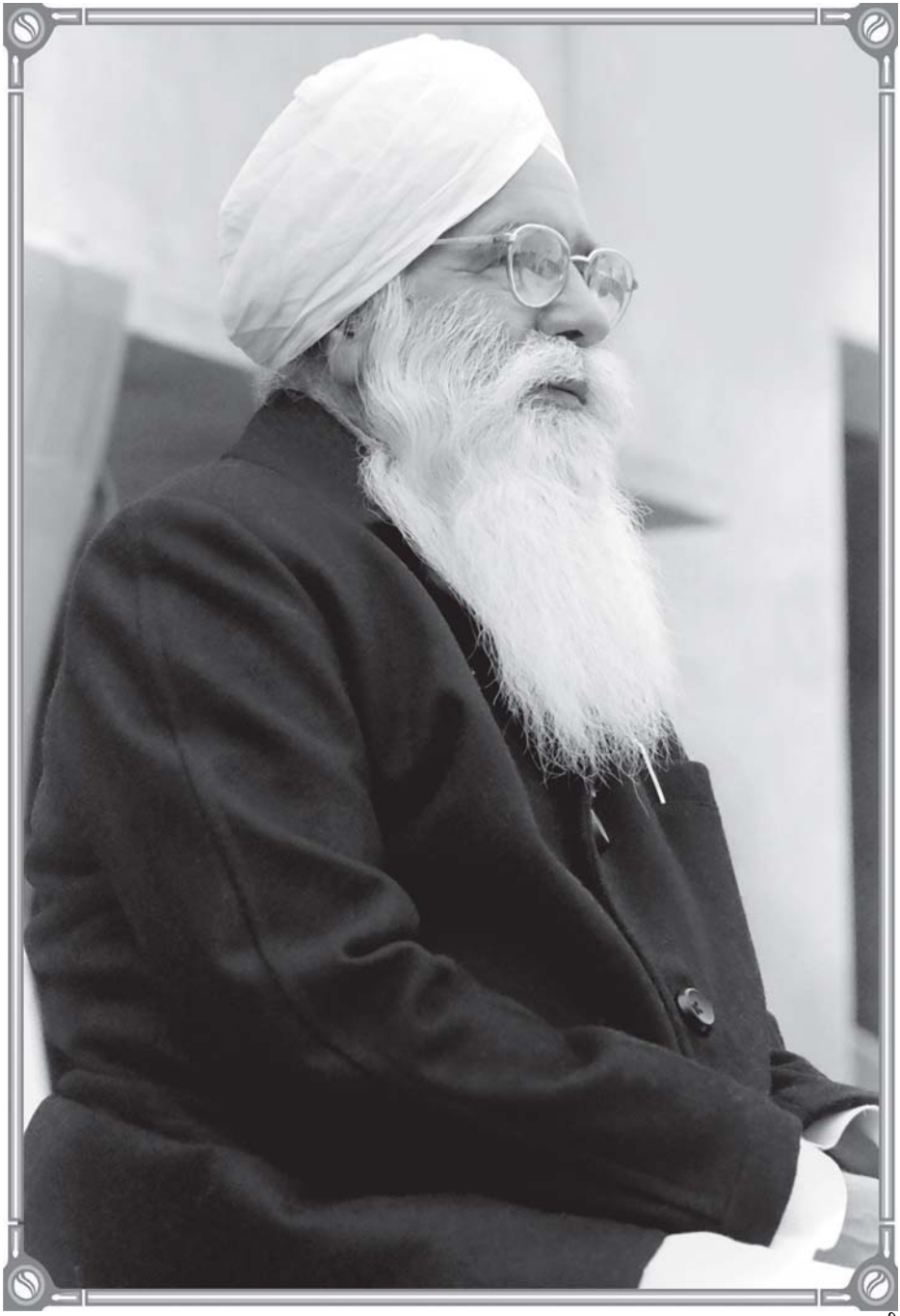

मधुसूदन हर धार प्रभ किरपा कर किरपा गुरु मिलाईऐ।।

हम दुनियादार लोग परमात्मा के आगे अरदास करते हैं। कोई धन-दौलत, कोई बेटे-बेटियां, कोई ऊँचे ओहदे तो कोई मान-बड़ाई मांगने में लगा हुआ है लेकिन जिनकी आँखे खुल जाती हैं वे कहते हैं, ''हे परमात्मा! अगर तू हम पर कृपा करता है तो हमारा मिलाप गुरु से करवा दे।''

बचपन में जब मुझे इतनी सुरत भी नहीं थी। मैं जब कभी अकेला बाहर जाता तो यही सोचता था कि वे कैसे प्रेमी थे, कैसी आत्माएं थी जिन्होंने गुरु नानकदेव जी या गुरु गोबिंद सिंह जी के दर्शन किए। मैं सिक्ख परिवार में पैदा हुआ जहाँ आमतौर पर घर में दसों गुरुओं की चर्चा होती रहती थी। चलते-फिरते अकेले ही ख्याल आता कि वे कैसे भाग्यशाली प्रेमी थे जिन्हें गुरु के चरनों में बैठने का मौका मिला फिर यह भी सुनते थे कि कई आदमी गुरु से बेमुख हुए। फिर दिल में ख्याल आया कि उनके कैसे खोटे कर्म थे? बचपन से ही मेरे दिल में यह ख्याल आता क्या मुझे भी कोई गुरु मिलेगा, मैं भी उनके चरनों में बैठूंगा?

सच्चे पातशाह महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर देती है।'' अगर हम फुल्के के लिए पुकार करते हैं तो परमात्मा जरूर इंतजाम करता है अगर हम गुरु से मिलने के लिए पुकार करें तो वह हमारी पुकार जरूर सुनता है।

मैं बताया करता हूँ कि मुझे मेरी जिंदगी में न कोई उनकी बड़ाई करने वाला मिला न कोई उनकी निन्दा करने वाला मिला। ये सब वही जानें कि आप पांच सौ किलोमीटर चलकर अपनी दया

लेकर आए। मैं नहीं जानता था कि आपको मेरा नाम कैसे पता लगा? आपने अपने प्रेमी मेरे पास भेजे कि आज घर में ही रहें मैंने आना है। मेरा दिमाग बचपन से ही गुरु के लिए था। मैंने आपसे कहा, ''मेरा दिल-दिमाग खाली है मुझे पता नहीं कि मैं आपके साथ क्या बात करूं?'' महाराज जी ने कहा, ''मेरे पास दिमागी कुश्तियां करने वाले बहुत पहलवान हैं। मैं खाली जगह देखकर ही तेरे पास आया हूँ।''

आप कहते हैं, ''हे परमात्मा! तू कृपा कर। मेरा मिलाप ऐसे गुरु के साथ करवा दे जो दिल की जानता है।'' लेकिन हम उसे नहीं मांग रहे होते अगर उसे ही मांगे तो वह खुद आ जाएगा। हम दुनिया के खिलौनों की तरफ लगे हुए हैं।

जन नानक निरबाण पद पाया मिल साधु हर गुण गाईऐ।।

गुरु साहब ने हमें छोटे से शब्द में बताया है कि हमारा मन किस तरह हिरन की तरह बाहर की तरफ जाता है, किस तरह इसे सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाना है, किस तरह गुरु के शब्द की कमाई करनी है, किस तरह इसे हौमें से बचाना है? इसका एक ही तरीका 'शब्द-नाम' की कमाई है।

आप प्यार से कहते हैं इंसान का जामा बहुत ही पुण्यों का ईनाम है, जिसे परमात्मा देता है। जिन्हें इंसान का जामा पाकर ऐसा गुरु नहीं मिला उनका दुनिया में आने का मकसद पूरा नहीं होता। परमात्मा ने हर एक के अंदर नाम का खजाना रखा है लेकिन ऐसे गुरुओ के चरनों में न जाने की वजह से हम उनसे नावाकिफ रह जाते हैं, उनसे फायदा नहीं उठा सकते। मैंने पहले भी बताया थाः

गुरु प्रसादी त्रिकुटी छूटे चौथे पद लिव लाई।

हमने गुरुओं की कृपा से त्रिकुटी से पीछा छुड़ाना है। जब हम उस जगह पहुँच जाते हैं तो हमारी आत्मा मन के पंजे से आजाद हो जाती है इसकी गाँठ खुल जाती है तब हम दसवें द्वार में पहुँचकर शब्द का नूर, गुरु का नूर देखते हैं।

सन्त दिवाली नित करे सतलोक के माहे।
और मते सब काल के यू हीं धूल उड़ाए।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जो वहाँ पहुँचते हैं वे नित्य दिवाली करते हैं। ऋषियों-मुनियों ने हमें समझाने के लिए बताया है कि जो **दिवाली** हम बाहर देखते हैं इसके पीछे रूहानियत का बहुत रहस्य छिपा हुआ है।

आप कहते हैं कि निर्वाण पद वह है जहाँ जाकर हमारी सारी आशा-मंशा सुन्न हो जाती हैं। निर्वाणों का एक पंथ भी है। मैं यह नहीं कहता कि बेटे-बेटियाँ छोड़कर अपने घर की कमाई छोड़कर लोगों के आगे हाथ फैलाते फिरें। आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण के तीनों पर्दे उतारकर ब्रह्म, पारब्रह्म उससे आगे दसवें द्वार में पहुँच गए, वहाँ हमारी लिव परमात्मा के साथ लग जाती है। जब हमारा ख्याल उस शब्द के साथ जुड़ जाता है हमारे अंदर शब्द प्रकट हो जाता है। हमारा ख्याल दुनिया से निकलकर परमात्मा के साथ जुड़ जाता है। हमारी आत्मा उस जगह पहुँच जाती है जहाँ से वह आवाज वह शब्द आ रहा है।

गुरु रामदास जी महाराज ने इस शब्द में हमें प्यार से समझाया है कि 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपने जीवन को पवित्र बनाएं। हमें जो मौका मिला है इससे पूरा फायदा उठाएं।

***

3 नवम्बर 1994

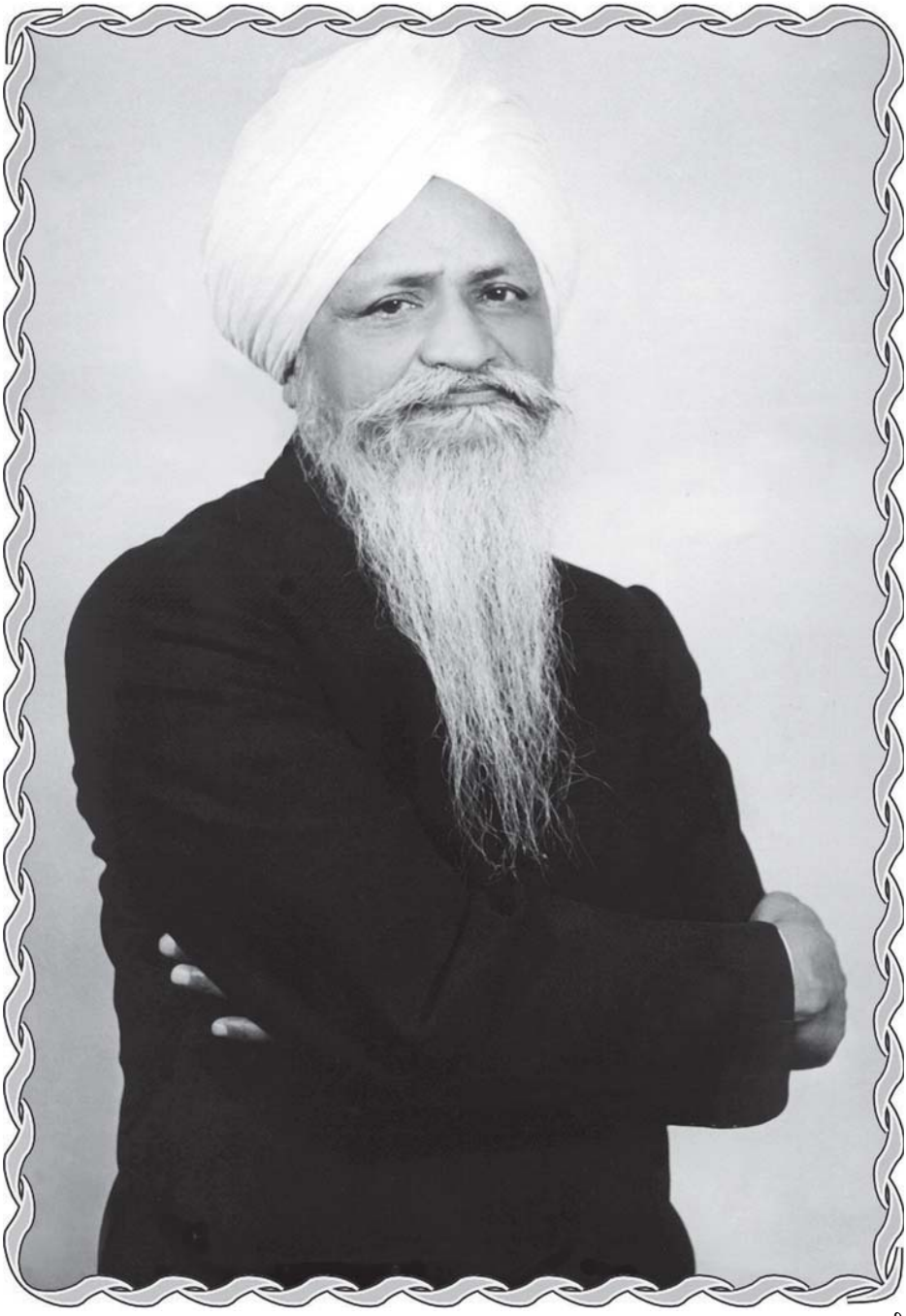

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सतसंग हॉल के बारे में

बाबा सोमनाथ जी की संगत को संदेश

यह हॉल बाबा सोमनाथ जी ने संगत की सेवा के लिए बनवाया था। मैंने कल भी सतसंग में कहा थाः

तरवर सरवर सन्तजन चौथे बरसे मेह।
पर स्वार्थ के कारणे चारो धारे देह।।

कबीर साहब कहते हैं, ''सन्त संसार में दुनिया के लिए आते हैं, उनका अपना कोई लालच नहीं होता और न ही वे कर्मों की कैद में आते हैं।'' सन्त दुनिया को प्रभु से मिलने का रास्ता बताते हैं और यही हिदायत करके जाते हैं अगर आप इस रास्ते पर चलेंगे तो आपका फायदा होगा।

हमें पता है कि संसार मंडल में बड़े-बड़े सन्त-महात्मा कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी, स्वामी जी महाराज, जयमल सिंह जी, सावन सिंह जी आए लेकिन कोई भी महात्मा सदा इस संसार मंडल में नहीं रहा क्योंकि यह रचना ही ऐसी है। हर किसी को अवधि पूरी होने पर इस संसार यात्रा को पूरी करके जाना पड़ता है। चाहे कोई दस दिन पहले चला जाए चाहे कोई दस दिन बाद चला जाए लेकिन जाना जरूर पड़ता है। कबीर साहब कहते हैंः

सन्त मुए क्या रोईऐ जो अपने गृह जाए।
रोवो साकत बापुरे जो हाटो हाट बिकाए।।

जब सन्त संसार छोड़ जाते हैं तो आप क्यों रोते हैं क्यों पछतावा करते हैं वे तो अपने घर सच्चखंड चले गए हैं; साकतों को रोयें जो जगह-जगह जाकर जन्म लेते हैं। ऐसा नहीं कि बाबा जी चले गए हैं तो हम उस मत से भटक जाएं, हम उनकी याद ही न

मनाएं या उनका नाम ही न लें। काबिल औलाद वही होती है जो उनकी जगह की संभाल करे, उनके नाम को रोशन करे। वह सच्चखंड में बैठे हुए भी आप लोगों का इंतजार कर रहे हैं। उनके जाने के बाद हमारा फर्ज बनता है कि उनके मिशन को चलाएं।

गुरु नाम देकर कभी नहीं छोड़ता, बेफिक्र नहीं होता जब तक अपने शिष्य की आत्मा को सच्चखंड नहीं पहुँचा देता। महाराज सावन सिंह जी को संसार की यात्रा पूरी करके गए हुए कई साल हो गए हैं लेकिन जिन्हें महाराज सावन सिंह जी ने नामदान दिया था आज भी उन आत्माओं को लाभ मिल रहा है। जो लोग सावन महाराज के बताए हुए रास्ते पर चल रहे हैं उन्हें आज भी वैसा ही अनुभव हो रहा है, सावन की रहनुमाई मिल रही है।

इसी तरह अगर आप लोग भी बाबा सोमनाथ जी के बताए हुए रास्ते पर चलेंगे तो आपको भी उनका प्यार और आर्शिवाद मिलेगा। मैंने कल भी बताया था कि मैं यहाँ आपको उनके साथ जोड़ने के लिए और आपके प्यार को मजबूत करने के लिए आया हूँ। आप इसे बाबा सोमनाथ का आर्शिवाद समझें।

पश्चिमी भाईयों को किसी प्रकार का कोई लालच नहीं है। ये यहाँ खाना खाने के लालच में या यह जगह लेने के लिए नहीं आए और न ही हम आपकी जगह लेने के लिए आए हैं। हमारे पास हमारे सतगुरु का दिया हुआ सब कुछ है। हमारे गुजारे के लिए सतगुरु ने इंतजाम कर दिया है। हमारा यहाँ आने का मकसद या इन लोगों का मुझे यहाँ लाने का मकसद सिर्फ 'शब्द-नाम' की कमाई करना और बाबा जी के बताए हुए मार्ग को और आगे बढ़ाना है। कबीर साहब कहते हैं:

सन्त सन्त को दो कर जानी सो जन जान नर्क की खानी।

सन्त अंदर से एक ही होते हैं। चाहे कोई सन्त पचास साल, पांच सौ साल या पांच हजार साल पहले होकर चला गया है, वे एक ही घर सच्चखंड से मालिक के हुक्म में आते हैं और मालिक के हुक्म का ही प्रचार करते हैं। हम लोग कमाई नहीं करते पार्टियां बना लेते हैं। कोई कहता है कि मैं फलाने सन्त का सेवक हूँ सिर्फ कमाई न होने की वजह से हम ऐसा कहते हैं अगर हम कमाई करें तो हमारे दिल से यह शक-शकूक निकल सकता है।

प्रेमियों ने जो कार्यक्रम बनाया है मैं उसके मुत्तलिक बताता हूँ इस बार पश्चिम के थोड़े से प्रेमी आए हैं। दिसम्बर में मैंने इन लोगों के साथ तीन दिन की बजाय एक सप्ताह का प्रोग्राम बनाया है। ये लोग आपको बहुत सहयोग देंगे इनके अलावा और लोग भी आपको सहयोग देंगे। इन्होंने मुझसे बात कर ली है मैंने इजाजत दे दी है कि ये राजस्थान की बजाय मुम्बई आ सकते हैं और यहाँ के प्रोग्राम के बाद राजस्थान भी जा सकते हैं।

आप लोगों का फर्ज बनता है कि आप ज्यादा से ज्यादा भजन करें, बातें कम करें। ऐसा न सोचें! बाबा सोमनाथ हमें छोड़ गए हैं। मैं आपको वायदे के साथ कहता हूँ कि बाबा जी का आर्शिवाद आपके साथ है। हम बाबा जी के आर्शिवाद से ही यहाँ इस सतसंग हाल में और आपकी संगत में आए हैं।

बाबा जी ने पश्चिमी प्रेमियों के अंदर बैठकर उनकी चाबी मरोड़ी कि संगत बही जा रही है संगत को हमारा भेद बताएं। इस बारे में पश्चिमी प्रेमियों ने बम्बई के लोगों को जानकारी दी। सबसे पहले कौल ने अपनी पत्नी को नाम दिलवाया ताकि प्रेमियों

को यकीन हो जाए कि यह बाबा जी की दया है। हमारा फर्ज बनता है कि हम बाबा जी की दया से कुछ फायदा उठाएं।

मैं जब अगली बार आपके बीच आऊँ तो आप मुझे ज्यादा से ज्यादा भजन-अभ्यास किए हुए मिलें तो मैं आपसे मिलकर खुश होऊंगा कि बाबा सोमनाथ की संगत ने बहुत भजन-अभ्यास किया है। आपने आपस में प्रेम-प्यार बनाकर रखना है सबने साथ मिलकर चलना है, एक-दूसरे की बात को मानना है। सन्त जहाँ भी बैठते हैं उस धरती को पवित्र करते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

साध चरण अड़सठ से उत्तम, वह भूमि पवित्र जहाँ साध पग धरदे।

एक तरफ अड़सठ तीर्थ हैं और दूसरी तरफ सन्तों के चरण हैं जिस धरती पर सन्तों के चरण पड़ जाते हैं वह धरती पवित्र हो जाती है। यह हाल बाबा सोमनाथ ने सतसंग के लिए बनवाया है। आप इस सतसंग हाल से फायदा उठाएं। यहाँ सतसंग करना आपके लिए फायदेमंद है। यहाँ सतसंग और अभ्यास करें। यहाँ बुरी बात सोचना भी गुनाह है अगर किसी ने बुरी बात सोचनी है तो वह सड़क पर जाकर सोचे।

मैं यहाँ के प्रबंधकों का हार्दिक स्वागत करता हूँ और मेरे दिल में उनके लिए इज्ज़त है क्योंकि उन्होंने इस जगह को बहुत अच्छे तरीके से संभालकर रखा है। मैं आशा करता हूँ कि वे आगे भी बाबा जी के आश्रम को इसी तरह संभालकर रखेंगे। मैं आप लोगों की सेवा करने के लिए तैयार हूँ अगर किसी के भजन में रूकावट है तो वह अकेले में बड़ी खुशी से मुझे बता सकता है या पत्र डालकर मुझसे पूछ सकता है। आप हिन्दी में पत्र लिखेंगे तो हिन्दी में जवाब आएगा अगर पंजाबी में लिखेंगे तो पंजाबी में जवाब आएगा। पत्र लिखते समय छोटा और साफ पत्र लिखें।

आप इसे बाबा सोमनाथ जी की दया समझें कि वह हमारे ऊपर फिर से दया करने के लिए आ गए हैं। आप लोग हमारे प्यार को समझने की कोशिश करें, हम आपके पास प्यार लेकर आए हैं। आपका आश्रम आपको मुबारक हो, हम आपके आश्रम पर कब्जा करने के लिए नहीं आए और न ही ऐसा करेंगे। यह आश्रम बाबा सोमनाथ जी का है और बाबा सोमनाथ जी का ही रहेगा। यह सतसंग हाल सन्तों का है। आप यहाँ आकर फायदा उठाएं अगर कोई आपको बाबा जी के पास पहुँचने में मदद करे तो उसकी मदद से फायदा उठा लेना कोई बुरी बात नहीं है।

जैसे आप बाबा सोमनाथ जी की तस्वीरे देखते हैं कि उन्होंने नाम को हासिल करने के लिए कितना संघर्ष किया जटाएं रखी, नंगे शरीर, नंगे पैरों घूमते रहे और बहुत तप किए उन्होंने ये सारे कर्मकांड नाम के लिए किए। आप बड़े-बड़े साधु-सन्तों के पास जाते रहे तो आपको सच्चा सन्त मिला। इसी तरह मुझे भी हिन्दुस्तान में खूब घूमने का मौका मिला। मैं भी काफी समाजों में गया लेकिन कोई वक्त आया जब वह सच्चा सन्त भी मिल गया। अगर हम नाम की कमाई करेंगे तो हमारे अंदर के शक-शकूक खत्म हो जाएगें। कल मैंने सतसंग में बताया था कि शक तब तक ही है:

जो जो चोर भजन के प्राणी से से दुख सहे।
आलस नींद सतावें उनको नित नित भ्रम गहे।।

जो भजन नहीं करते वे आलसी, दरिद्री हो जाते हैं उन्हें नींद, काम और क्रोध घेर लेते हैं। सबसे बड़ी चीज उन्हें भ्रम घेर लेता है, इस भ्रम में नहीं पड़ना। आप लोगों ने प्यार बनाकर रखना है एक-दूसरे के प्रति इज्जत रखनी है और बाबा जी पर श्रद्धा लानी है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

विदाई संदेश

परमात्मा ने हम सबको दस दिन अपनी भक्ति और प्यार का मौका दिया। मेरे जाने के बाद आप उसे तभी कायम रख सकेंगे अगर आप अपने घरों और अपने देश में अपना अभ्यास जारी रखेंगे और सतसंग में हाजरी लगाते रहेंगे। महाराज कृपाल सदा कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाएं।''

जो प्रेमी इस कार्यक्रम में शामिल हुए हैं और इस कार्यक्रम में जिन बीबियों ने खाना बनाने की, भाईयो ने हर प्रकार की मदद की है हम उन सबका धन्यवाद करते हैं। यह बहुत उत्तम मौका था जिसमें आप सबने तन-मन और धन से सेवा करके फायदा उठाया। मैं बताया करता हूँ कि सन्त-महात्मा रब के बंदे होते हैं वे हर जन होते हैं। उनका बाहर के किसी पहनावे से ताल्लुक नहीं होता। वे हर आत्मा के साथ प्यार करते हैं, चाहे वह आत्मा किसी भी मुल्क या किसी भी कौम की है।

आत्मा परमात्मा की अंश है बुराई मन के अंदर है। सन्त-महात्माओं का बाहर के रीति-रिवाज के साथ कोई लगाव नहीं होता। वे किसी कौम की निन्दा नहीं करते और न ही अपने सेवको को निन्दा सिखाने के लिए आते हैं। वे तो हमें यह बताते हैं कि किसी के लिए बुरा न सोचें। सब जिया-जन्त परमात्मा ने बनाए हैं, परमात्मा सबका दाता है। किसी कौम या इंसान के लिए बुरा सोचने वाला अपनी रूहानियत का ज्यादा से ज्यादा नुकसान कर रहा होता है, वह परमात्मा के साथ भी नफरत कर रहा होता है।

मैं आशा करता हूँ कि आपने इन दस दिनों में जो कुछ सुना है आप सब इस पर चलने की कोशिश करेंगे। मैंने इस कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा बताया है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं, हम शरीर को चलाने वाले हैं। औरत-मर्द की आत्मा का भेद दसवें द्वार तक है। जब हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं वहाँ लिंग भेद भी खत्म हो जाता है क्योंकि आत्मा न औरत है न मर्द है। जब हम स्थूल शरीर से सूक्ष्म में जाते हैं वहाँ जाति-पाति का ताल्लुक खत्म हो जाता है।

महात्मा ने न कोई जाति बनाई न कोई समाज बनाया। वे न कोई नई कौम बनाने के लिए आते हैं और न ही पहले की बनी कौम तोड़ने के लिए आते हैं। वे हमें यह नहीं कहते कि आप घर की जिम्मेवारियां छोड़कर जंगलो-पहाड़ो में छिप जाओ या पहाड़ियों में एकांत ले लो। वे कहते हैं कि आप घर की जिम्मेवारियां निभाते हुए परमात्मा की भक्ति कर सकते हैं। परमात्मा के लिए तीन-चार घंटे का समय जरूर निकालें क्योंकि परमात्मा ने हमें सब कुछ दिया है। जिन महात्माओं ने आत्मा और माया की खोज की है उन्हें पता है कि आत्मा कितनी कीमती चीज़ है। आत्मा होने की वजह से ही हमारा शरीर दौड़ रहा है शोभा प्राप्त कर रहा है।

प्यार ही परमात्मा है। आप सबने प्रेम-प्यार से चलना है, अपने हमसाये के साथ प्यार करना है। महात्मा प्यार के समुद्र होते हैं। परमात्मा सन्तों के अंदर बैठकर ही प्यार का संदेश देता है। सन्त जो कुछ भी बोलते हैं हमारे फायदे के लिए बोलते हैं। जो आत्माएं महात्मा के उपदेश पर चलती हैं वे अपनी जिंदगी में ही देख लेती हैं कि हमारा क्या फायदा हुआ? मैं आशा करता हूँ कि आपने जो कुछ सुना है इस पर अमल करना है।

18 जनवरी 1985

***

धन्य अजायब

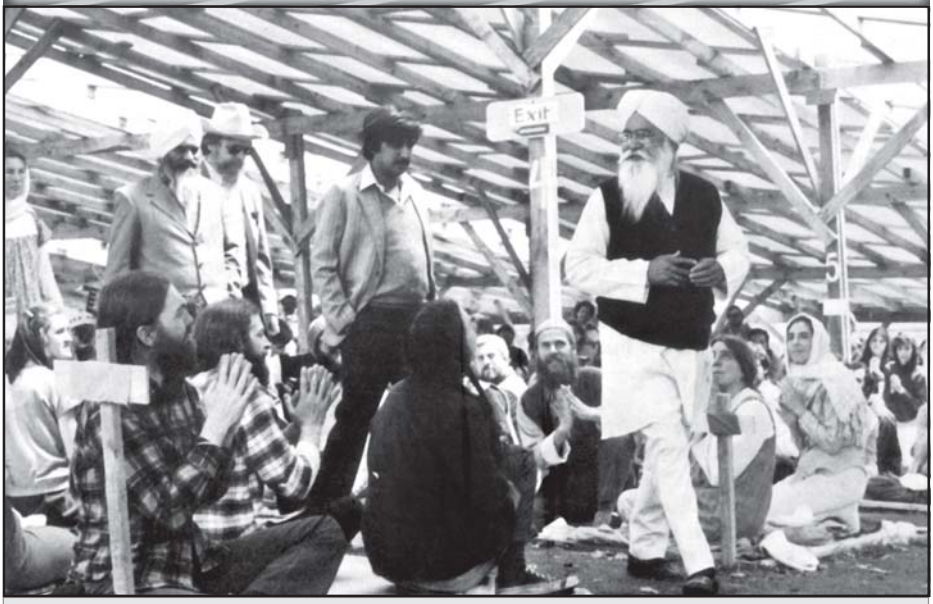

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम:

27, 28 व 29 नवम्बर 2015

25, 26 व 27 दिसम्बर 2015

2, 3, 4,5 व 6 फरवरी 2016

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से मुम्बई में 6,7,8,9,10 जनवरी 2016 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन, शान्तिलाल मोदी मार्ग
(नजदीक मयूर सिनेमा), कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई–400 067
☎ 098 33 00 4000, व (022) –24965000